पेंग गाँव की चेंग कथाएँ

माधव केलकर

शुरुआत एक स्कूल विज़िट के किस्से से करता हूँ। मैं बिहार की एक शाला में प्राचार्य कक्ष में शिक्षा की गुणवत्ता पर बातचीत कर रहा था। प्राचार्य महोदय ने बताया कि वे अपने साथी शिक्षकों के साथ मिलकर एक नवाचार की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने मेरे सामने कक्षावार बने कुछ रजिस्टर रखे जिनमें हरेक दिन हर पीरियड में पढ़ाए जाने वाले पाठ, सम्बन्धित गतिविधि, बच्चों द्वारा पूछे गए सवाल, प्राचार्य की टिप्पणी आदि लिखने की जगह बनाई गई थी। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उनके इस रजिस्टर वाले आयडिया पर कुछ सुझाव दूँ। मैंने कहा, "यदि आप इसी फॉर्मेट पर सुझाव चाहते हैं तो वो दे दूँगा। लेकिन मैं सोचता हूँ कि रजिस्टर में इतनी कम जगह में विस्तार पूर्वक लिखने में दिक्कत होगी। बेहतर होगा कि सभी शिक्षक रोज़ शाला के बाद एक रिफ्लेक्टिव नोट लिखा करें और हफ्ते में एक बार सभी साथ बैठकर इन्हें पढ़ें, सुनें और चर्चा करें।" इस पर प्राचार्य जी ने कहा, "ठीक है, हम कोशिश करेंगे। लेकिन इसके लिए हमें मार्गदर्शन चाहिए होगा।" मैंने भी इस प्रयास में मदद के लिए हामी भर दी। तो आगे जो कुछ लिखने वाला हूँ वो ऐसे ही नवाचार पसन्द शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षक

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए विविध तरह के प्रयास शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं, प्रशिक्षण, नई पाठ्यचर्या, नई पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से किए जाते हैं। इसी सिलसिले में शासन के साथ मिलकर कई गैर-शासकीय संस्थाएँ भी लर्निंग

लॉस, एफएलएन, दक्षता उन्नयन, प्रशिक्षण, मॉड्यूल निर्माण जैसी पहलकदमी के साथ इन कोशिशों में शामिल हो जाती हैं।

ऐसे सभी प्रयास इस विश्वास पर चलते हैं कि शिक्षक एक प्रमुख भूमिका में इन्हें कक्षा में बच्चों तक लेकर जाएगा। इसी तरह गैर-शासकीय संस्थाएँ भी इसी विश्वास पर चलती हैं कि उनके कार्यकर्ता शालाओं में शिक्षकों को समुचित मदद देते रहेंगे। और कुल मिलाकर शिक्षक कक्षा और शाला के वातावरण में यथासम्भव बदलाव कर पाएगा।

शिक्षकों के प्रशिक्षण में प्रशिक्षणकर्ता बार-बार इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शिक्षकों को रिफ्लेक्टिव टीचिंग करनी चाहिए, रिफ्लेक्टिव डायरी लिखनी चाहिए, रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट लिखनी चाहिए। शिक्षकों का चिन्तन और लेखन एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ होता है। इसी तरह गैर-शासकीय संस्थाएँ भी अपने कार्यकर्ताओं से रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट बनाने के लिए कहती हैं। कार्यकर्ताओं के फील्ड विज़िट के ब्यौरे और देखी गई या खुद करवाई गतिविधियों पर समीक्षात्मक लेखन यकीनी तौर पर एक प्रमुख दस्तावेज़ साबित होता है। इन दोनों तरह के दस्तावेज़ीकरण से शिक्षकों एवं कार्यकर्ताओं के लिए अपने काम को समीक्षात्मक नज़रिए से देखना और अपनी रणनीतियों में ज़रूरी बदलाव कर पाना सम्भव हो पाता है।

आप किसी शाला में शिक्षक द्वारा हाल ही में कक्षा में पढ़ाए पाठ या टॉपिक्स के ब्यौरों को देखेंगे तो उसमें शायद ही रिफ्लेक्शन जैसा कुछ दिखेगा। तारीख, पाठ का नाम, क्या पढ़ाया – इतना ही लिखा होता है। लेकिन प्लान क्या था, किस तरह करवाया गया, बच्चे कितना समझ पाए, किन अवधारणाओं में कौन-सी चुनौतियाँ पेश आईं, बच्चों के क्या सवाल थे, शिक्षक किन सवालों के जवाब नहीं दे पाया, अनुतरित सवालों के जवाब किस तरह देने का विचार है, शिक्षक को पाठ को पढ़ाने में किस तरह की दिक्कतें पेश आईं – ऐसी तमाम बातें रिपोर्ट या डायरी का हिस्सा नहीं बन पातीं। कुछ शिक्षकों से मेरी बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि उन्हें न तो रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट का अर्थ मालूम है और न उन्होंने ऐसी किसी रिपोर्ट का उदाहरण ही देखा है। इसलिए ऐसी रिपोर्ट में क्या हो सकता है और क्या नहीं, इसको लेकर उन्हें कोई अन्दाज़ नहीं है। उन्होंने कहा, "लेकिन कुछ उदाहरण वगैरह बताए जाएँ तो हम भी कोशिश कर सकते हैं।"

इसी तरह एक गैर-शासकीय संस्था के कार्यकर्ताओं ने बताया कि उन्हें भी रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट लिखने के लिए कहा जाता है। एक बार कोई रिसोर्स पर्सन भी आए थे जिन्होंने घण्टे भर के सेशन में पॉवर पॉइंट की मदद से रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट के बारे में

समझाया। इस सेशन से उन्हें इतना समझ आया कि फील्ड विज़िट को डीटेल में लिखना है। उनका कहना था कि "लेकिन हर दिन शाम को हमें जो ऑनलाइन फॉर्म भरना होता है, उसमें शब्द सीमा होती है। इसलिए चाहकर भी हम डीटेल में नहीं लिख सकते। दूसरी समस्या है, हमारे सामने ऐसे कोई ठोस उदाहरण भी नहीं हैं जिससे समझ में आए कि अपनी रिपोर्ट राइटिंग को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।"

एनसीएफ व एनसीटीई लगातार सहभागिता-पूर्ण टीचिंग-लर्निंग अप्रोच पर ज़ोर देता रहा है। इनकी अनुशंसाओं के मुताबिक शिक्षकों को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि वे बच्चों को पढ़ाने में आनन्द का अनुभव करें और सीखने वाले की चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होकर समाधान सोच सकें।

रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट के लिहाज़ से यदि हम शिक्षकों को ध्यान में रखते हुए सोचें तो समझ आएगा कि शिक्षक के कक्षाई अनुभव, पाठ को तैयार करना, सह-शिक्षकों से विचार-विमर्श, समुदाय के साथ बातचीत, अपने अनुभवों का समीक्षात्मक विश्लेषण करना, आने वाले कल के लिए अपनी अप्रोच में क्या सुधार करना है – ये सब रिफ्लेक्टिव राइटिंग के हिस्से हो सकते हैं।

समीक्षात्मक चिन्तन के अवसर?

अब ज़रा यह सोचकर देखते हैं कि एक शिक्षक के लिए समीक्षात्मक चिन्तन के कितने मौके हो सकते हैं।

एक – जब शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहा हो और जैसे ही उसे यह समझ आए कि उसे अपने पढ़ाने के तरीके में बदलाव करना होगा, या कुछ नए उदाहरण बताने होंगे, या बच्चों को किसी टीएलएम को दिखाने से बेहतर समझ में आएगा – तब शिक्षक तुरन्त

एक्शन ले लेता है। इसे रिफ्लेक्शन इन एक्शन (Reflection in action) कहते हैं।

दो – शिक्षक कक्षा में पढ़ाने के बाद जब भी थोड़े खाली समय में अपनी कक्षा के बारे में सोचता है और उसे समझ आता है कि आज की कक्षा में क्या कमीबेशी रह गई थी, तो उसे चिन्हित कर उसके निदान के बारे में सोचता है। इस प्रक्रिया को रिफ्लेक्शन ऑन एक्शन (Reflection on action) कहते हैं।

तीन – जब कोई शिक्षक अपनी आज की कक्षा में हुई कमीबेशियों के बारे में सोचते हुए, अगले दिन की कक्षा के लिए एक बेहतर योजना बनाकर बच्चों को एक बेहतर अनुभव देने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया को रिफ्लेक्शन फॉर एक्शन (Reflection for action) कहते हैं।

यदि उपरोक्त में से पहली या दूसरी प्रक्रिया की शुरुआत हो गई है तो मानकर चलिए कि शिक्षक जल्द ही रिफ्लेक्टिव टीचिंग के साथ-साथ रिफ्लेटिव रिपोर्ट भी बनाने लगेंगे। हो सकता है, अभी तक शिक्षक एक संक्षिप्त वर्णनात्मक रिपोर्ट लिख रहा था लेकिन आगे चलकर थोड़ी गहराई वाली वर्णनात्मक रिपोर्ट लिखेगा, और बाद में समीक्षात्मक रिपोर्ट लिखेगा।

यहाँ शिक्षकों व फील्ड कार्यकर्ताओं की सुविधा के लिए कुछ वर्णनात्मक, थोड़ी गहरी और कुछ समीक्षात्मक रिपोर्ट साझा कर रहे हैं। इन रिपोर्ट को बतौर नमूना या एक विचार के रूप में ही मानकर चलिए। आप इन्हें कॉपी न करते हुए अपनी समझ के मुताबिक रिपोर्ट बनाएँगे, यह उम्मीद रहेगी। इन रिपोर्ट का सम्बन्ध किसी संस्था, किसी शाला के साथ सीधा-सीधा न जोड़ा जा सके, इस लिहाज़ से इन्हें 'ऐंग गांव' की रिपोर्ट कहा जा रहा है। इन्हें आप काल्पनिक भी मान सकते हैं।

कुछ उदाहरण शालाओं से

धातु-अधातु पाठ
(संक्षिप्त वर्णनात्मक रिपोर्ट)

कक्षा सातवीं में मेरी आज की योजना में धातु और अधातु पाठ पढ़ाना था। मैंने इस पाठ से सम्बन्धित एक चार्ट तैयार किया था। यदि आप चार्ट बनाकर ले जाते हैं तो बच्चों को अमूर्त अवधारणाएँ भी आसानी-से समझ में आ जाती हैं। मैंने बच्चों से कहा कि वे प्रमुख बिन्दुओं को अपनी नोटबुक में नोट करते चलें। मैंने देखा, कुछ बच्चे अपनी नोटबुक में कुछ नहीं लिख रहे थे। बच्चों के इस व्यवहार का विश्लेषण करने की कोशिश की तो मुझे समझ आया कि शायद बच्चों को ऐसा कुछ विशेष नहीं लगा होगा जिसे नोट किया जाए। इसलिए उन्होंने नोटबुक में कुछ नहीं लिखा।

– एक शिक्षक, माध्यमिक शाला, ऐंग गांव

गंदे जल का निपटान
(संक्षिप्त वर्णनात्मक रिपोर्ट)

आज मुझे कक्षा सातवीं को - गंदे जल का निपटान - अध्याय करवाना था। मैं कक्षा में गया। वहाँ बच्चे काफी शोर कर रहे थे। एक-दूसरे को कागज़ की गोलियाँ फेंककर मार रहे थे। मैंने डस्टर को टेबल पर बजाया और कक्षा शान्त हो गई। तुरन्त एक-दो बच्चे अपने साथियों की शिकायत करने लगे। मैंने सभी को कहा, "कीप सायलेंस। चुप रहो। शोरगुल किया तो कक्षा से बाहर कर दूँगा।"

फिर विज्ञान की किताब खोलकर 'गंदे जल का निपटान' पाठ सभी बच्चों से खोलने के लिए कहा। बच्चों से कहा कि बारी-बारी से हर बच्चा खड़ा होकर एक-एक पैराग्राफ पढ़ता जाएगा। जहाँ कोई बात समझ न आए, तुरन्त पूछ ले। इस तरह हमने पाठ को पूरा पढ़ा। मैंने बच्चों से कहा कि पीछे दिए सवाल होमवर्क हैं। उन्हें घर से करके लाना है।

- एक शिक्षक, माध्यमिक शाला, ऐंग गांव

टिप्पणी- *उपरोक्त दोनों रिपोर्ट को संक्षिप्त वर्णनात्मक रिपोर्ट कहना उचित होगा। इन्हें कक्षा से बाहर, थोड़ी फ़ुर्सत मिलने पर लिखा गया है। पहली रिपोर्ट में शिक्षक धातु-अधातु वाले पाठ की कठिन अवधारणाओं के लिए चार्ट (टीएलएम) लेकर गया। सम्भवतः बोर्ड पर पाठ के प्रमुख बिन्दु लिखवा दिए गए। लेकिन पाठ की कठिन अवधारणाएँ क्या थीं, बच्चों को उन्हें समझाने में शिक्षक कहाँ तक सफल हुआ, क्या कोई प्रयोग करके भी देखे गए, बच्चों के सवाल क्या थे, अगले पीरियड के लिए क्या प्लानिंग है – ऐसी ज़्यादातर महत्वपूर्ण बातें इस रिपोर्ट से गायब हैं। आज की कक्षा के अनुभव के बारे में भी कुछ खास नहीं कहा गया।*

दूसरी संक्षिप्त रिपोर्ट - गंदे जल का निपटान - में तो शिक्षक ने पाठ पढ़ाने का एकदम शॉर्टकट तरीका अपनाया - न प्लान है, न रिफ्लेक्शन। कक्षा को खामोश कैसे बिठाया गया, सिर्फ उसका जीवन्त वर्णन है।

कोशिश रहे कि ऐसी संक्षिप्त रिपोर्ट न बनाई जाए। हमारे अवलोकन एवं बच्चों के साथ अनुभव वगैरह भी रिपोर्ट में शामिल होना अत्यन्त ज़रूरी हैं।

थोड़ी गहराई से लिखी गई रिपोर्ट

कक्षा-2: जानवरों व पक्षियों पर चर्चा

आज का प्लान:

- जानवरों व पक्षियों पर बातचीत की जाएगी।
- जंगली जानवर, पालतू जानवर और सवारी के काम आने वाले जानवरों पर बातचीत।
- जानवरों के घर कहाँ होते हैं?
- जानवरों के विविध रंग।
- घर में रहने वाले जानवरों पर बातचीत।
- क्या जानवर एक-दूसरे की मदद करते हैं?

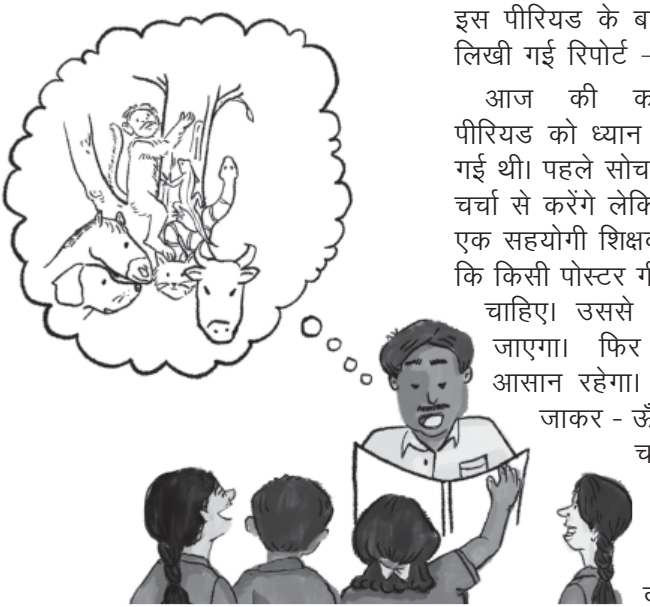

इस पीरियड के बाद शिक्षिका द्वारा लिखी गई रिपोर्ट –

आज की कार्य-योजना एक पीरियड को ध्यान में रखकर बनाई गई थी। पहले सोचा था कि शुरुआत चर्चा से करेंगे लेकिन टीचर्स रूम में एक सहयोगी शिक्षक ने सुझाव दिया कि किसी पोस्टर गीत से शुरू करना चाहिए। उससे एक माहौल बन जाएगा। फिर चर्चा करवाना आसान रहेगा। तो, मैंने कक्षा में जाकर - ऊँट चला भाई ऊँट चला – पोस्टर गीत से शुरुआत की। हमने एक-एक पंक्ति को दो-तीन बार दोहराया भी। सभी बच्चे खुलकर गा रहे थे। जो नहीं खुल रहे थे, उन्हें इशारा करके शामिल किया जा रहा था।

फिर सभी से ऊँट को लेकर कुछ सवाल पूछे गए। जैसे - किस-किस ने ऊँट देखा है, ऊँट की सवारी किस-किस ने की है, ऊँट कितना ऊँचा होता है आदि। इससे आगे की चर्चा खुल गई। बच्चों से ऐसे जीवों के नाम पूछे गए जो उन्होंने देखे हैं। इस सूची में गाय, कुत्ता, चूहा, तितली, क्रॉकरोच, साँप, गिरगिट, छिपकली, चींटी, तोता, चिड़िया, मुर्गी, कौआ, शेर, हिरन, बकरी, मक्खी आदि शामिल हो गए।

यह पूछने पर कि ये जीव रहते

कार्य-योजना व गतिविधियाँ:

- जानवरों-पक्षियों पर चर्चा में कुछ चित्रों एवं किताब का उपयोग। चर्चा गोले में बैठकर।
- बच्चों को दो समूहों में बाँटकर एक समूह के बच्चे अपने जाने-पहचाने जीव की आवाज़ निकालेंगे। दूसरे समूह के बच्चे उस जीव को पहचानेंगे। तत्पश्चात उस जीव की कद-काठी, रंग, वह कहाँ रहता है आदि पर भी बात होगी।
- *ऊँट चला* या *धम्मक धम्मक आता हाथी* पोस्टर गीत को मिलकर गाएँगे।
- *लालू-पीलू* कहानी पर बच्चों से रोल प्ले करवाना।

कहाँ हैं, कुछ बच्चों ने बताया - घर में, पेड़ पर, ज़मीन पर, बिल में, दीवार पर, पिंजरे में आदि।

"इनमें से किसे पालते हैं और कौन-से ऐसे हैं जिन्हें नहीं पालते?" बच्चों ने तोता, गाय, कुत्ता, मुर्गी, बिल्ली को पालने वाला बताया। एक बच्चे ने बोला, "पालतू मतलब हम उनको खाना-पानी देते हैं, उनकी देखभाल करते हैं। वो बीमार हो जाएँ तो इलाज करवाते हैं।"

बच्चों ने साँप और शेर को जंगली बताया। उन्होंने कहा कि जो जंगल में रहते हैं, वो जंगली जानवर होते हैं। बच्चों से पूछा कि जंगली जीवों को खाना-पानी कौन देता होगा। एक-दो बच्चों ने कहा, "मालूम नहीं।" लेकिन कुछ बच्चों ने कहा कि "जंगल में वो अपने लिए शिकार खोज लेते हैं, नाले का पानी पी लेते हैं।"

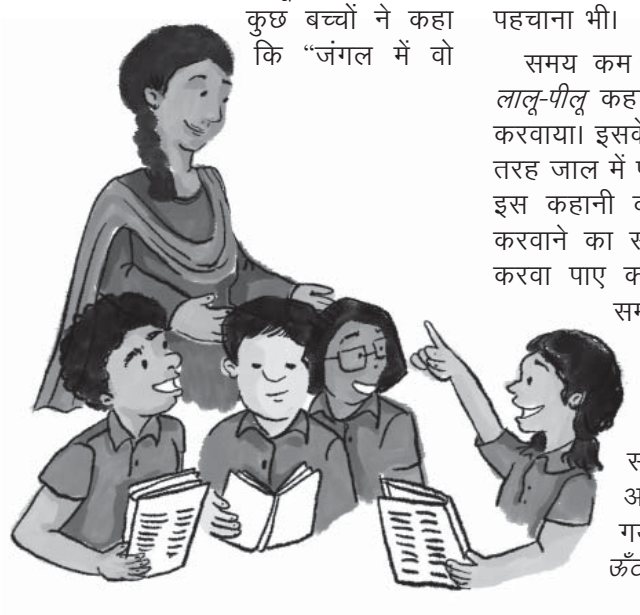

"छिपकली, क्रॉकरोच, मकड़ी वगैरह रहते तो घर में ही हैं लेकिन इन्हें हम पालतू क्यों नहीं कहते?" यह पूछने पर एक-दो बच्चों ने बोला कि "हम छिपकली-कॉक्रोच को न पालते हैं, न खाना देते हैं, न पानी पिलाते हैं। वो ऐसे ही घर में घुस आते हैं और हमारे घर में रहने लगते हैं। साँप और चूहे भी कभी-कभी हमारे घर में घुस जाते हैं।"

इसके बाद आसपास के जीवों की आवाज़ वाली गतिविधि की। बच्चों ने गाय, कुत्ता, बकरी, मच्छर, बिल्ली, मुर्गे आदि की आवाज़ निकाली और बाकी बच्चों ने इन आवाज़ों को पहचाना भी।

समय कम होने के कारण हमने *लालू-पीलू* कहानी का रोल प्ले नहीं करवाया। इसके अलावा चूहे ने किस तरह जाल में फँसे शेर की मदद की, इस कहानी को भी रीड अलाऊड करवाने का सोचा था, लेकिन नहीं करवा पाए क्योंकि इसके लिए भी समय नहीं बचा था।

आज की कक्षा के बारे में सोचती हूँ तो लगता है कि मेरे साथी शिक्षक द्वारा अन्तिम समय पर दिया गया सुझाव अच्छा था। *ऊँट चला* कविता से अच्छा

माहौल बन गया और आगे के सेशन में बच्चों की भागीदारी भी अच्छी रही। बच्चों ने पालतू और जंगली जीवों के बारे में काफी अच्छे से अन्तर करके बताया। मुझे कुछ फोटोग्राफ या वीडियो साथ ले जाने चाहिए थे ताकि बच्चे उन्हें भी देख पाते। कक्षा में अभी भी 4-5 बच्चों की बातचीत में काफी कम भागीदारी थी। मुझे उनके साथ अलग से बातचीत करके समझना चाहिए कि वे इतना कम क्यों बोलते हैं।

चूँकि चर्चा विस्तार से हुई इसलिए टाइम मैनेजमेंट थोड़ा गड़बड़ा गया। लेकिन कोशिश करेंगे कि जो आज छूट गया है, उसे अगले किसी पीरियड में करवाया जा सके।

- एक शिक्षिका, प्राथमिक शाला, ऐंग गाँव

टिप्पणी– *इस रिपोर्ट में शिक्षिका ने एक अच्छा और महत्वाकांक्षी प्लान बना लिया था जो शुरू से ही कई चीज़ों को समेटता हुआ दिखाई दे रहा था। शिक्षिका काफी ईमानदारी से जो करवा पाई, जो छूट गया और टाइम मैनेंजमेंट की बात करती है। बच्चों के साथ बातचीत के ब्यौरे को थोड़ा विस्तार से बताती तो रिपोर्ट में और पुख्तापन आता। खैर, उन्होंने अपनी प्लानिंग और कमीबेशियों का आकलन कर मुद्दों को चिन्हित भी किया है। इस लिहाज़ से इसे थोड़ी गहराई में जाकर रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट बनाना कह सकते हैं।*

गंदे जल का निपटान

एक रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट

आज मुझे कक्षा सातवीं को – गंदे जल का निपटान – अध्याय करवाना था। मैंने तैयारी के लिए पाठ को एक बार पढ़ा और कुछ पारिभाषिक शब्दों को लेकर तैयारी की। जैसे गंदा जल, अपशिष्ट जल, मल युक्त जल, विश्व जल दिवस, दूषित जल जनित रोग, जल का उपचार, गंदा जल निपटान में मानव श्रम आदि। पिछले वर्ष देश में सीवर लाइन की सफाई के दौरान श्रमिकों के साथ हुई दुर्घटनाओं की खबरों की कटिंग और औद्योगिक इकाइयों द्वारा जल प्रदूषण की खबरें भी साथ रखीं।

कक्षा में पाठ पढ़ाने से पहले हमने पिछले साल पढ़े गए पेयजल वाले पाठ और पेयजल के स्रोतों के बारे में बात की। काफी बच्चों को उस पाठ के बारे में बहुत-सी बातें याद थीं। फिर हमने पेय जल दूषित कैसे होता है, इसके बारे में थोड़ी बात की। बच्चे इस बारे में भी थोड़ा-बहुत बता पा रहे थे।

फिर हमारे घरों से निकलने वाले पानी पर बात की। बच्चों ने बताया कि घर से निकलने वाला पानी पास की नालियों के ज़रिए नाले या नदी में जाकर मिल जाता है। यह पानी अपने साथ 'सभी गंदगी' लेकर जाता है। 'सभी गंदगी' का मतलब पूछने पर बच्चों ने बताया – कागज़,

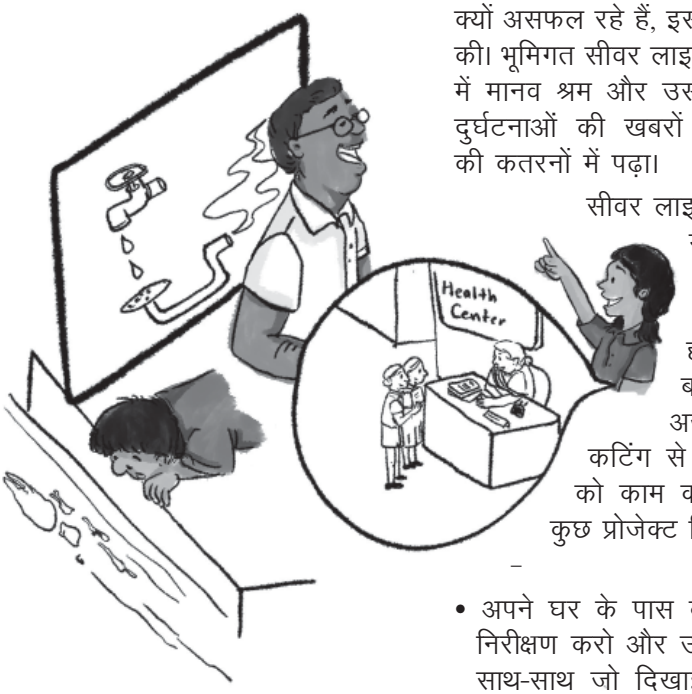

प्लास्टिक, साबुन-डिटरजेंट, टॉयलेट की गंदगी, सड़ा खाना आदि। बच्चों से पूछा गया कि "क्या इस पानी में कोई जीव-जन्तु भी होते हैं?" इस पर बच्चों ने बताया कि "हाँ, साँप-मेंढक तो होते ही हैं, लेकिन बहुत सारे सूक्ष्मजीव भी होते हैं जो तबीयत खराब कर देते हैं।"

जैसे-जैसे हम पाठ में आगे बढ़ते जा रहे थे, जल प्रदूषित कैसे होता है, इसमें इन्सान की क्या भूमिका होती है, मल-युक्त जल और औद्योगिक अपशिष्ट के निपटान के उपायों आदि के बारे में जाना। निपटान के उपाय क्यों असफल रहे हैं, इस पर भी चर्चा की। भूमिगत सीवर लाइनों की सफाई में मानव श्रम और उससे सम्बन्धित दुर्घटनाओं की खबरों को अखबार की कतरनों में पढ़ा।

सीवर लाइन की सफाई में आने वाली चुनौतियों और काम के हालात के बारे में भी अखबार की कटिंग से जाना। बच्चों को काम करने के लिए कुछ प्रोजेक्ट दिए गए, जैसे –

- अपने घर के पास की नाली का निरीक्षण करो और उसमें पानी के साथ-साथ जो दिखाई दे रहा है, उसकी सूची बनाओ।
- नाली के पानी को सूक्ष्मदर्शी से देखकर, उसमें मौजूद जीवों के चित्र बनाना और उन्हें पहचानना।
- आपकी शाला से निकलने वाला गंदा जल जिन नालियों से होता हुआ पास के किसी नाले तक पहुँचता है, उसका रेखाचित्र बनाओ।
- प्रायमरी हैल्थ सेंटर पर जाकर पता करो कि पेचिश, खुजली, हैजा, पीलिया, मलेरिया, मस्तिष्क ज्वर आदि रोग दूषित जल से किस तरह होते हैं और इनके

रोकथाम के क्या उपाय हो सकते हैं।

प्रोजेक्ट कार्य के बारे जानने के बाद कुछ बच्चों ने कहा कि मैं उनके साथ प्रायमरी हैल्थ सेंटर जाकर सम्बन्धित व्यक्ति से मिलवा दूँ ताकि उन्हें अपने सवालों के सन्तोषजनक जवाब मिल सकें। इसके लिए मैंने हामी भर दी। कुछ बच्चों ने कहा कि उन्हें सूक्ष्मदर्शी से देखना सिखाया जाए। इसके लिए भी मैंने 'हाँ' कहा।

शाम को आज की कक्षा के बारे में लिखते हुए अच्छा लग रहा है। मेरी कक्षा में अभी भी ऐसे कुछ बच्चे हैं जो लिखने में कमज़ोर हैं। वे मन से सोचकर नहीं लिख पाते परन्तु उन्हें ब्लैकबोर्ड या किताब में कहीं कुछ लिखा मिल जाए तो उसे तुरन्त नोटबुक में लिख लेते हैं। वे अवधारणाओं को समझकर खुद सोचकर लिखें, मुझे इसके लिए कुछ विशेष प्रयास करने होंगे।

- एक शिक्षक, माध्यमिक शाला, ऐंग गाँव

टिप्पणी - अपनी पूर्ववर्ती रिपोर्ट के मुकाबले, यह रिपोर्ट थोड़ी बेहतर है। रिपोर्ट बेहतर इस मामले में है कि इसमें शिक्षक ने पाठ की तैयारी के लिए क्या किया, उसका प्लान क्या था, पहले के पाठ के साथ सहसम्बन्ध जोड़ना, विविध अवधारणाओं पर चर्चा करना और अन्त में बच्चों को कुछ प्रोजेक्ट कार्य देना जैसे बहुत-से पहलु शामिल हैं। इसके बाद की कुछ बातें, जैसे प्रोजेक्ट को बच्चों ने किस तरह किया, उनसे क्या हासिल किया जा सका आदि शिक्षक की अगली किसी रिपोर्ट का हिस्सा हो सकते हैं।

शिक्षकों के रिफ्लेक्टिव रिपोर्ट वाले इस हिस्से को अब यहीं रोकेंगे। उम्मीद है कि इस बातचीत और उदाहरणार्थ दी रिपोर्ट से कुछ मदद मिलेगी। अगले हिस्से में गैर-शासकीय संस्था के कार्यकर्ताओं की रिपोर्ट राइटिंग पर चर्चा करेंगे।

...जारी

माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

चित्र: पूजा के. मैनन: *एकलव्य,* भोपाल में बतौर जूनियर ग्राफिक डिज़ाइनर काम किया है। वर्तमान में स्वतंत्र रूप से चित्रकारी कर रही हैं।